1

आगस्त कॉम्ट

[AUGUSTE COMTE : 1798 – 1857]

फ्रान्स के महान विचारक आगस्त कॉम्ट को आधुनिक 'समाजशास्त्र का जनक' (Father of Sociology) माना जाता है। कॉम्ट ही वह पहले विचारक थे जिन्होंने सामाजिक चिन्तन को वैज्ञानिक रूप देकर समाजशास्त्रीय चिन्तन की एक नयी परम्परा का आरम्भ किया। उन्होंने सर्वप्रथम एक ऐसे सामाजिक विज्ञान की कल्पना की जो दूसरे सामाजिक विज्ञानों से पृथक् और स्वतन्त्र रहकर सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक प्रगति का अध्ययन कर सके। आरम्भ में कॉम्ट ने ऐसे विज्ञान को **'सामाजिक भौतिकशास्त्र'** (Social Physics) का नाम दिया लेकिन बाद में सन् 1838 में उन्होंने इसी को **'समाजशास्त्र'** (Sociology) नाम से सम्बोधित किया।[1] इस विज्ञान की विषय-सामग्री को स्पष्ट करते हुए कॉम्ट ने लिखा कि "समाजशास्त्र का अध्ययन-क्षेत्र विभिन्न सामाजिक विज्ञानों में पायी जाने वाली एकता तथा सामाजिक व्यवस्थाओं को ज्ञात करना है जिससे सामाजिक जीवन को संगठित बनाया जा सके।" इसी कारण उन्होंने समाज की रचना में व्यक्ति, परिवार तथा राज्य आदि सभी को महत्वपूर्ण स्थान दिया। कॉम्ट के सामाजिक चिन्तन को समझने से पहले एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि क्या कॉम्ट से पहले किसी भी दूसरे विद्वान द्वारा सामाजिक जीवन का व्यवस्थित अध्ययन नहीं किया गया ? वास्तविकता यह है कि मानव सदैव से एक जिज्ञासु प्राणी रहा है। प्राकृतिक घटनाओं के अतिरिक्त बहुत लम्बे समय से अनेक दार्शनिक विद्वानों ने सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों को अपने-अपने ढंग से स्पष्ट करने का प्रयत्न किया था। भारत, बेबीलोन तथा मिस्र में आज से हजारों वर्ष पहले अनेक विद्वानों ने व्यक्ति तथा समाज के पारस्परिक सम्बन्धों, समाज में श्रम-विभाजन तथा अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों की विस्तृत विवेचना करके सामाजिक व्यवस्था को एक विशेष रूप देने के प्रयत्न किए थे। यूरोप के बारे में उल्लेख करते हुए टी. के. पेनिमेन (T. K. Penniman) ने लिखा है कि ईसा से लगभग 400 वर्ष पहले हेरोडोटस (Herodotus) ने समाज तथा व्यक्ति के सम्बन्धों का सूक्ष्म रूप से विश्लेषण किया। हेरोडोटस के बाद डेमोक्रिटस (Democritus), प्रोटेगोरस (Protegoras), सुकरात (Socrates), प्लेटो (Plato) तथा अरस्तू (Aristotle) ने भी व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राज्य के पारस्परिक सम्बन्धों की व्यवस्थित विवेचना प्रस्तुत की थी। इसके बाद भी यह सच है कि ईसा से लगभग 1400 वर्ष का एक लम्बा काल ऐसा व्यतीत हुआ जिसमें सामाजिक चिन्तन के क्षेत्र में कोई उल्लेखनीय योगदान नहीं किया जा सका।

पन्द्रहवीं शताब्दी का मध्यकाल इटली में बौद्धिक क्रान्ति का काल माना जाता है। इस समय से इटली के अतिरिक्त जर्मनी, फ्रान्स तथा इंग्लैण्ड में भी सामाजिक जीवन के विभिन्न

---

[1] Abraham and Morgan : *Sociological Thought*, p. 12.

पक्षों पर नये सिरे से विचार किया जाने लगा। इस काल को यूरोप में 'पुनर्जागरण का काल' (Age of Renaissance) कहा जाता है। पुनर्जागरण के काल में हॉब्स, लॉक तथा रूसो जैसे महान विचारकों ने मानवतावाद, वैयक्तिक स्वतन्त्रता, सामाजिक समानता तथा लोकतान्त्रिक व्यवस्था जैसे सिद्धान्तों के आधार पर समाज और व्यक्ति के सम्बन्धों को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त में थामस हॉब्स ने सामाजिक चिन्तन को एक नयी दिशा देते हुए यह स्पष्ट किया कि सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में व्यक्ति, समाज तथा राज्य के बीच स्वस्थ सम्बन्धों का होना आवश्यक है जिसके लिए व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।[1] इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए ह्यूम (Hume), कान्ट (Kant) तथा गाल (Gall) आदि विद्वानों ने व्यक्ति और राज्य के सम्बन्धों पर अपने विचार देना आरम्भ कर दिया। कॉम्ट ने समाज के वैज्ञानिक अध्ययन से सम्बन्धित जो विचार प्रस्तुत किये, उन पर इन विद्वानों की एक स्पष्ट छाप दिखायी देती है। इस काल में प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन करने के लिए विज्ञान के जिन नये सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ, कॉम्ट के प्रत्यक्षवादी विचार उनसे एक बड़ी सीमा तक प्रभावित होने लगे। उनके ऐतिहासिक निर्णयवादी विचारों पर ह्यूम (Hume) तथा तूर्गो (Turgot) का प्रभाव पड़ा। इसके साथ ही बूसेट (Bossuet), विर्को (Vico) तथा डि मैस्ट्री (De Maistree) के विचारों से प्रभावित होकर कॉम्ट ने 'नियति-शासित व्यवस्था' (Providential Order) का विश्लेषण किया जबकि तूर्गो, कांडरसेट (Condercet), बोडिंग (Bourdin) तथा सेन्ट साइमन (Saint Simon) आदि के विचारों के आधार पर ही उन्होंने मानव के बौद्धिक विकास के त्रि-स्तरीय नियमों का विश्लेषण किया।

कॉम्ट के विचारों को प्रभावित करने में सन् 1789 में होने वाली **फ्रान्स की क्रान्ति** का भी स्पष्ट योगदान रहा है। फ्रान्स की क्रान्ति के फलस्वरूप यूरोप में एक लम्बे समय से चली आ रही सामन्तवादी व्यवस्था समाप्त हो गयी। इस समय कैथॉलिक चर्च के पादरियों की अलौकिक सत्ता समाप्त होने लगी, कुलीन वर्ग के पास कोई विशेष अधिकार नहीं रहे तथा जनसाधारण की शक्ति बढ़ने लगी। इसी काल में सन् 1770 से लेकर सन् 1830 के बीच इंग्लैण्ड में **औद्योगिक क्रान्ति** का दौर चला जिसने यूरोप के अनेक दूसरे देशों में नयी दशाएँ पैदा करके बौद्धिक वर्ग के चिन्तन को नयी दिशा देना आरम्भ कर दिया। इस समय जहाँ एक ओर मशीनों द्वारा बड़ी मात्रा के उत्पादन में तेजी से वृद्धि हुई, वहीं दूसरी ओर परम्परागत कुटीर उद्योगों का तेजी से पतन होने लगा, बेरोजगारी में अभूतपूर्व वृद्धि हुई, नगरीय जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होने लगी तथा सामाजिक जीवन के सभी पक्षों में परिवर्तन स्पष्ट होने लगा। औद्योगीकरण के प्रभाव से पुरानी वर्ग व्यवस्था के स्थान पर एक नयी वर्ग व्यवस्था का उदय हुआ। इसके अन्तर्गत समाज पूँजीपति, मध्यम तथा मजदूर जैसे तीन मुख्य वर्गों में विभाजित हो गया। फ्रान्स की क्रान्ति तथा औद्योगिक क्रान्ति के प्रभाव से अब आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक व्यवस्था में परिवर्तन होने लगा तब समाज में अनेक ऐसी नयी समस्याएँ उत्पन्न होने लगीं जिनका निराकरण वैज्ञानिक चिन्तन के द्वारा ही किया जा सकता था। उन्हीं दशाओं के बीच कॉम्ट ने यह सोचना आरम्भ कर दिया कि समाजशास्त्र के रूप में एक ऐसे विज्ञान को विकसित करना आवश्यक है जिसमें सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक प्रगति का अध्ययन किया जा सके। साथ ही उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि सामाजिक व्यवस्था तथा प्रगति

---

1 Makhan Jha : *An Introduction to Anthropological Thought*, p. 10.

का अध्ययन केवल कल्पना और कुछ सिद्धान्तों के आधार पर नहीं किया जा सकता बल्कि इसके लिए सामाजिक घटनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन, परीक्षण तथा वर्गीकरण आवश्यक है। इसी सन्दर्भ में कॉम्ट ने सामाजिक पुनर्निर्माण की एक ऐसी योजना भी प्रस्तुत की जिसके द्वारा फ्रान्स की तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था को प्रगति की ओर ले जाया जा सके। समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट के इस योगदान को स्पष्ट करने से पहले उनके जीवन तथा कृतियों के बारे में संक्षेप में जानना आवश्यक है।

जीवन-परिचय एवं कृतियाँ
(LIFE SKETCH AND WORKS)

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रमुख विचारक तथा समाजशास्त्र के जनक आगस्त कॉम्ट का जन्म 19 जनवरी, 1798 को दक्षिण फ्रान्स के मॉन्टपेलियर (Montpellier) नामक स्थान में एक कैथॉलिक परिवार में हुआ था। इनका पूरा नाम 'इसीडोर आगस्त मेरी फ्रान्कोयस जेवियर कॉम्ट' (Isidore Auguste Marie Francois Xavier Comte) था। फ्रान्सीसी भाषा में इनके नाम का उच्चरण '**आगुस्त कोंत**' किया जाता है। कॉम्ट के पिता राजस्व-कर विभाग में एक साधारण अधिकारी थे जहाँ उन्हें एक कट्टर राजभक्त (ardent loyalist) के रूप में देखा जाता था। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य कोटि की थी। अपने प्रारम्भिक जीवन में माता-पिता के प्रभाव के कारण कॉम्ट भी कैथॉलिक धर्म की शिक्षाओं में विश्वास करते थे लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने कैथॉलिक धर्म के कट्टर आचरणों का विरोध करना आरम्भ कर दिया। बचपन से ही कॉम्ट में दो विशेषताएँ स्पष्ट होने लगी थीं—पहली यह कि उनमें एक प्रखर बौद्धिक क्षमता थी, तथा दूसरी यह कि उनका तत्कालीन सामाजिक तथा राजनैतिक सत्ता में अधिक विश्वास नहीं था। बचपन से ही अपनी मेधावी प्रतिभा के कारण उन्हें अनेक पुरस्कार प्राप्त होने लगे। कॉम्ट को यह बिल्कुल पसन्द नहीं था कि किसी विशेष विचार अथवा सिद्धान्त को उनके ऊपर थोपा जाय। इन्हीं विशेषताओं के कारण उनके मित्र तथा सहयोगी उन्हें एक दार्शनिक (Philosopher) कहने लगे। कॉम्ट की प्रारम्भिक शिक्षा अपने नगर मॉन्टपेलियर में ही हुई। उसके बाद की शिक्षा के लिए उन्हें पेरिस के एक पॉलीटेक्नीक स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। उन्होंने वहाँ के कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेना आरम्भ कर दिया तथा स्कूल के एक भ्रष्ट प्राध्यापक को वहाँ से निष्कासित करवाने में भी कॉम्ट ने सक्रिय योगदान दिया। इन गतिविधियों के कारण कॉम्ट न केवल अपने मित्रों में लोकप्रिय हो गये बल्कि स्थानीय राजनीतिज्ञों ने भी उनकी प्रशंसा करना आरम्भ कर दिया। कॉम्ट ने तेरह वर्ष की आयु में ही अपने परिवार के राजनैतिक तथा धार्मिक विचारों को छोड़कर स्वतन्त्र रूप से चिन्तन करना आरम्भ कर दिया। चौदह वर्ष की आयु में उन्होंने सामाजिक पुनर्निर्माण के विषय में चिन्तन आरम्भ आरम्भं कर दिया जबकि सोलह वर्ष की आयु में ही कॉम्ट ने गणित पर कुछ इतने सारगर्भित व्याख्यान दिये कि उनकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ने लगी। स्पष्ट है कि कॉम्ट ने बहुत कम आयु से ही अपने आप को एक निर्भीक और स्वतन्त्र विचारक के रूप में स्थापित करना आरम्भ कर दिया था।

कॉम्ट अपने अध्ययन के दौरान फ्रान्स के एक प्रमुख विचारक **बेन्जामिन फ्रेंकलिन** (Benzamin Franklin) से भी बहुत अधिक प्रभावित थे। कॉम्ट उन्हें आधुनिक सुकरात के रूप में देखते थे तथा उनकी जीवन-पद्धति का अनुकरण करना चाहते थे। अपने स्कूल के एक मित्र को इस सम्बन्ध में उन्होंने लिखा, "मैं आधुनिक सुकरात अर्थात् बेन्जामिन फ्रेंकलिन का अनुकरण करना चाहता हूँ, उनकी बौद्धिक क्षमता का नहीं बल्कि उनकी जीवन-पद्धति का।"

कॉम्ट जब बीस वर्ष की आयु के थे तब वह उस समय के प्रमुख विचारक और दार्शनिक सेण्ट साइमन के सम्पर्क में आये। उन दोनों का घनिष्ठ सम्पर्क सन् 1818 से 1824 तक बना रहा। अपनी क्षमता और कार्य-प्रणाली से सेण्ट साइमन को प्रभावित करके वह उनके निजी सचिव बन गये। यही कारण है कि कॉम्ट की कृतियों में सेण्ट साइमन के अनेक विचार संशोधित रूप में स्पष्ट होने लगे। इसके बाद भी कुछ विद्वानों का विचार है कि सेण्ट साइमन ने केवल उन्हीं विचारों को पुष्ट किया जो बीज रूप में कॉम्ट के मस्तिष्क में थे। इसे स्पष्ट करते हुए **कोजर** (Coser) ने लिखा है कि "यह कहना उचित होगा कि कॉम्ट, सेण्ट साइमन से बहुत अधिक प्रभावित थे और एक बड़ी सीमा तक उन्हीं के विचारों के आधार पर अपने विचारों को आगे बढ़ाने में सफल हो सके।"[1]

सेण्ट साइमन से कॉम्ट ने दो मुख्य बातें ग्रहण कीं—पहली यह कि विज्ञानों के बीच एक वस्तुनिष्ठ वर्गीकरण होना चाहिए, तथा दूसरी यह कि दर्शन का वास्तविक उद्देश्य सामाजिक वास्तविकताओं को उजागर करना होना चाहिए। इसी आधार पर कॉम्ट यह मानने लगे कि सामाजिक चिन्तन का उद्देश्य नैतिक, धार्मिक तथा राजनैतिक व्यवस्थाओं का पुनर्गठन करना है। इतना होते हुए भी कॉम्ट और सेण्ट साइमन के दृष्टिकोण में एक स्पष्ट अन्तर था। सेण्ट साइमन आत्म-अनुभूति के आदर्श पर अधिक बल देते थे जबकि कॉम्ट एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था के पक्ष में थे जिसमें मानव सच्चरित्र, संयमी तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला बन सके। इसके साथ ही सेण्ट साइमन के विचारों में उतनी वैज्ञानिकता और क्रमबद्धता नहीं थी जो कॉम्ट के विचारों में देखने को मिलती है। सेण्ट साइमन एक समाजवादी विचारक थे तथा सामाजिक व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना चाहते थे। दूसरी ओर कॉम्ट को इस दृष्टिकोण से एक विकासवादी कहा जा सकता है कि वह सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए धीरे-धीरे क्रमिक परिवर्तन को अधिक महत्व देना चाहते थे। सेण्ट साइमन और कॉम्ट के सम्बन्धों में सन् 1824 से तब दरार पड़ना शुरू हो गया जब कॉम्ट ने सेण्ट साइमन के कुछ अनुयायियों पर यह आरोप लगाया कि वे कॉम्ट के विचारों को सेण्ट साइमन के नाम से प्रचारित कर रहे हैं। इसी समय कॉम्ट ने 'पॉजिटिव फिजिक' (Positive Physic) नाम से लिखे गये एक लेख के द्वारा भी सेण्ट साइमन के क्रान्तिकारी और तीव्र परिवर्तन से सम्बन्धित विचारों की आलोचना करना आरम्भ कर दिया। बाद में कॉम्ट ने सेण्ट साइमन के सम्बन्ध में यहाँ तक टिप्पणी करना आरम्भ कर दिया कि वह एक 'नीम हकीम' (depraved quack) हैं तथा सामाजिक जीवन को व्यवस्थित बनाने के लिए उनके पास कोई वैज्ञानिक कार्यक्रम नहीं है।

सन् 1835 में कॉम्ट के जीवन का एक दुखद अध्याय तब आरम्भ हुआ जब उन्होंने कारोलिन मैसिन (Corolin Massin) के साथ विवाह किया। पत्नी के झगड़ालू और आलोचक स्वभाव के कारण उनका पारिवारिक जीवन कष्टपूर्ण हो गया। इस दुखी जीवन को भुलाने के लिए कॉम्ट अपना अधिकाधिक समय अध्ययन और लेखन कार्य में व्यतीत करने लगे। आर्थिक साधन और प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए उन्होंने सन् 1826 से विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देना आरम्भ कर दिया था। इन्हीं व्याख्यानों के दौरान कॉम्ट ने अपने उस प्रत्यक्षवाद (Positivism) की रूपरेखा भी प्रस्तुत की जिसे बाद में समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट के सबसे बड़े योगदान के रूप में देखा जाने लगा। अध्ययन, चिन्तन और लेखन में बहुत अधिक व्यस्त

1 Coser, L. A. : *Masters of Sociological Thought*, p. 28.

रहने के कारण सन् 1827 में कॉम्ट भयंकर मानसिक रोग से ग्रस्त हो गये लेकिन एक वर्ष के बाद ही स्वस्थ होने पर उन्होंने पुनः व्याख्यान देना आरम्भ कर दिया। सन् 1830 में उनकी महान कृति 'द कोर्स ऑफ पॉजिटिव फिलॉसफी' (The Course of Positive Philosophy) का प्रथम खण्ड प्रकाशित हुआ। यह पुस्तक छः खण्डों में विभाजित है जिसका अन्तिम खण्ड सन् 1842 में प्रकाशित हुआ। पारिवारिक सम्बन्ध लगातार तनावपूर्ण रहने के कारण सन् 1842 में ही कॉम्ट और उनकी पत्नी के बीच तलाक हो गया। विवाह-विच्छेद के बाद कॉम्ट एकान्त जीवन पसन्द करने लगे लेकिन फिर भी वह गम्भीर चिन्तन में लगे रहे। सन् 1844 में कॉम्ट एक चिन्तनशील महिला क्लोटाइल डी वॉक्स (Clotile de Vaux) के सम्पर्क में आये। इस महिला की मित्रता से उनके विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन होने लगे तथा कॉम्ट स्त्रियों के सच्चे प्रशंसक बन गये। आर्थिक कठिनाइयों के बाद भी सन् 1846 में डी वॉक्स की मृत्यु के साथ कॉम्ट का सुखद जीवन समाप्त हो गया। यहीं से कॉम्ट ने अपने आप को मानवता के पुनर्निर्माण के लिए समर्पित कर दिया। मानवता के पुनर्निर्माण से सम्बन्धित उनके विचार कॉम्ट की एक अन्य महान कृति *'System of Positive Polity'* में स्पष्ट हुए जो सन् 1851 से 1854 के बीच चार खण्डों में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में कॉम्ट ने सामाजिक पुनर्निर्माण की एक अनूठी रूपरेखा प्रस्तुत की। सामाजिक पुनर्निर्माण की योजना में कॉम्ट ने विज्ञान के स्थान पर आध्यात्मिक और नैतिक आदर्शों को अधिक महत्व दिया तथा सहनशीलता व न्याय को सामाजिक पुनर्गठन के लिए आवश्यक माना। मानवता के धर्म को स्थापित करने के लिए कॉम्ट ने परस्पर विरोधी विश्वासों तथा आचरणों का समन्वय करने और उनमें एकीकरण स्थापित करने पर बल देना आरम्भ कर दिया। स्त्रियों को प्रेम का प्रतीक मानते हुए सामाजिक पुनर्निमाण की योजना में उन्होंने स्त्रियों को नैतिक शक्ति का संचालन करने वाला प्रमुख माध्यम मान लिया। स्पष्ट है कि इस पुस्तक में कॉम्ट ने जो विचार प्रस्तुत किए वे इससे पहले लिखी गयी पुस्तक *'Positive Philosophy'* के विचारों से बिल्कुल भिन्न थे। इसी कारण उनके अनुयायी जॉन स्टुअर्ट मिल (John Stuart Mill) तथा लितरे (Littre) जैसे विद्वान उनकी इस पुस्तक को पढ़कर इतने दुखी और निराश हुए कि उन्होंने इस पुस्तक को कॉम्ट के बौद्धिक जीवन के पतन के रूप में मानना आरम्भ कर दिया।

एक प्रमुख विचारक होने के बाद भी कॉम्ट की आर्थिक स्थिति सदैव ही दयनीय रही। अपने व्याख्यानों से मिलने वाली राशि उनके लिए बहुत कम थी। *'The Course of Positive Philosophy'* पुस्तक प्रकाशित होने के बाद जब वह पॉलिटैक्नीक स्कूल के परीक्षक भी बन गये, तब उनकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होने लगा। इसके बाद भी उनके अनुयायी कॉम्ट के लिए चन्दा एकत्रित करके कभी-कभी उनकी सहायता कर देते थे। कॉम्ट ने स्वयं भी कभी ऐसी आर्थिक सहायता लेने से इन्कार नहीं किया। इसके विपरीत, उन्हें यह शिकायत रही कि उन्हें आर्थिक सहायता के रूप में बहुत कम राशि प्राप्त हो पाती है। सम्भवतः यह उनके चरित्र की एक ऐसी दुर्बलता थी जिसके लिए अनेक लोगों ने कॉम्ट की कटु आलोचना की है।

वास्तविकता यह है कि कॉम्ट की रचनाओं और उनके चिन्तन में एक असाधारण प्रतिभा स्पष्ट होती है। अनेक बाधाओं का सामना करते हुए भी कॉम्ट अपने विचारों पर अटल रहे तथा कठिन परिश्रम से समाजशास्त्र जैसे नये विषय को विज्ञान का रूप देने का प्रयत्न करते रहे। उनकी रचना-शैली, असाधारण स्मरण शक्ति तथा परिपक्व विचारों के कारण आलोचकों की तुलना में उनके प्रशंसकों की संख्या काफी अधिक थी। जिन लोगों ने भी कॉम्ट की

रचनाओं का सावधानी से अध्ययन किया, वे धीरे-धीरे उनके प्रशंसक बनते गये। सन् 1857 में समाजशास्त्र के जनक कॉम्ट कैन्सर की बीमारी से ग्रस्त हो गये तथा 5 सितम्बर, 1857 को कॉम्ट की मृत्यु हो गयी। कॉम्ट की मृत्यु के बाद भी उनके विचारों ने उन्हें अमर कर दिया। उनके चिन्तन की व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए **बार्न्स** (Barnes) ने लिखा है, "सामाजिक सिद्धान्तों अथवा सांस्कृतिक इतिहास के क्षेत्र में ऐसी कम ही समस्याएँ हैं जिन पर कॉम्ट ने विचार न किया हो।"[1] **रेमण्ड ऐरों** (Raymond Aron) ने समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट के योगदान को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि आगस्त कॉम्ट को मानवीय और सामाजिक एकता को स्थापित करने वाला प्रथम समाजशास्त्री कहा जा सकता है।"[2]

कॉम्ट की रचनाएँ (Works of Comte)

अपने संघर्षपूर्ण बौद्धिक जीवन में कॉम्ट ने अनेक मौलिक ग्रन्थों की रचना की। इन्हीं रचनाओं के द्वारा उन्होंने समाजशास्त्र को न केवल एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में प्रतिस्थापित किया बल्कि सामाजिक चिन्तन को भी एक नयी दिशा दी। कॉम्ट की रचनाओं में से निम्नांकित रचनाएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं :

(1) **A Plan of the Scientific Operations Necessary for Reorganization of Society**—सन् 1822 में प्रकाशित होने वाली कॉम्ट की यह पहली रचना है। इस पुस्तक में कॉम्ट ने सामाजिक पुनर्गठन के लिए वैज्ञानिक योजनाएँ प्रस्तुत करने के साथ ही उन्हें व्यावहारिक रूप देने के लिए महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये। पुस्तक की उपयोगिता को देखते हुए सेण्ट साइमन जैसे प्रमुख विचारक ने इसकी भूमिका लिखने का दायित्व लिया। इस पुस्तक के प्रकाशन के बाद कॉम्ट यह महसूस करने लगे कि सामाजिक प्रगति के लिए सामाजिक पुनर्निर्माण की योजना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि इसके लिए एक ऐसी सामाजिक नीति भी आवश्यक है जो अवलोकन और परीक्षण पर आधारित हो। इसी आवश्यकता को पूरा करने के लिए कॉम्ट ने अपने दूसरे ग्रन्थ की रचना की।

(2) **The Course of Positive Philosophy**—अनेक वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद कॉम्ट की इस रचना का प्रकाशन सन् 1830 से 1842 के बीच छः खण्डों में हुआ। इस पुस्तक में कॉम्ट ने प्रत्यक्षवाद के रूप में समाजशास्त्र के लिए एक नयी पद्धति को विकसित किया। इसका उद्देश्य सामाजिक अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक बनाना था। इसी पुस्तक में उन्होंने चिन्तन के तीन स्तरों का विस्तार से उल्लेख करने के साथ विज्ञानों का इस तरह वर्गीकरण किया जिससे समाजशास्त्र की आवश्यकता तथा उसके महत्व को समझा जा सके। यह पुस्तक मुख्य रूप से समाजशास्त्र के सैद्धान्तिक आधारों की विवेचना करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसी कारण इसे कॉम्ट की रचनाओं में सबसे अधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण समझा जाता है।

(3) **System of Positive Polity**—कॉम्ट द्वारा लिखी गयी यह पुस्तक सन् 1851 से 1854 के बीच चार खण्डों में प्रकाशित हुई। कुछ विद्वान यद्यपि इस पुस्तक को कॉम्ट के परिपक्व विचारों का आधार मानते हैं लेकिन इसी पुस्तक के कारण कॉम्ट के विचारों की वैज्ञानिकता में सन्देह भी किया जाने लगा। इसका कारण यह है कि कॉम्ट ने इस पुस्तक में

---

1 "There are few problems in social theory of cultural history upon which he did not touch." —Barnes, H. E. : *An Introduction to the History of Sociology*, p. 84.

2 Raymond Aron : *Main Currents in Sociological Thought*, p. 53.

जो विचार प्रस्तुत किये, उनके द्वारा सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए वैज्ञानिक आधारों की अपेक्षा आध्यात्मिक और नैतिक आदर्शों को कॉम्ट ने अधिक महत्वपूर्ण मान लिया। इसकी आलोचना करते हुए उनके एक प्रमुख अनुयायी जॉन स्टुअर्ट मिल ने लिखा है कि इस पुस्तक में कॉम्ट ने अपने वैज्ञानिक चिन्तन की स्वयं ही निर्ममता से हत्या कर दी। ऐसा प्रतीत होता है कि अपने कष्टप्रद पारिवारिक जीवन के बाद कॉम्ट तब श्रीमती डी वॉक्स के सम्पर्क में आये तब उन्होंने मानवता के धर्म को सामाजिक पुनर्निर्माण का मुख्य आधार मानना आरम्भ कर दिया। इसके बाद भी यह पुस्तक इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है कि इसमें कॉम्ट ने अपने सैद्धान्तिक विचारों को व्यावहारिक रूप देने का प्रयत्न किया है।

(4) **Catechism of Positivism**—यह कॉम्ट की अन्तिम रचना मानी जाती है जिसका प्रकाशन सन् 1852 में हुआ। इस पुस्तक में कॉम्ट ने एक ओर यूरोप के समाज में पायी जाने वाली गतिशीलता का विश्लेषण करते हुए जनतन्त्र का समर्थन किया वहीं दूसरी ओर उन्होंने प्रेस और वैयक्तिक स्वतन्त्रता को सामाजिक प्रगति के लिए आवश्यक बताया।

इन विभिन्न रचनाओं में कॉम्ट ने जिन प्रमुख विचारों तथा सिद्धान्तों को स्पष्ट किया, निम्नांकित विवेचन में हम उन्हीं में से कुछ प्रमुख विचारों और सिद्धान्तों के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट करेंगे।